

जयपुर। गुलाबी नगरी शनिवार वृद्धाश्रम,श्रद्धा और लोक संस्कृति के अनूठे संगम से सजावटी नजर आई। चमकते मास की रंगत के बीच ईसर-गणगण का उल्लास अपने चरम पर रहा। 15 श्रृंगार में सजी धृजी महिलाओं ने जयपुर-पारंपरिक वेशभूषा में सिर पर कल्ल धारण कर बाग-बगीचों से दूब और पुष्पां का अर्जन किया तो समूहों वतावरण गौर-गौर गोमती, ईसर पूजारी पार्वती... के मधुर लोकगीतों के गुंजायमान हो उठा। आस्था और श्रृंगार के इस महापर्व पर सुहागिन महिलाओं ने ईसर-गणगौर के समक्ष विधिधियां पूजन कर पति की दीर्घायु और अच्छे सौभाग्य का आशीर्वाद मांगा। वर कुंवारी कन्याओं ने मनचाहे वर का कामना के साथ माता गौरी व आराधना की। दूब,जल और सुहागिन सामग्री अर्पित करते हुए पारंपरिक रीति के साथ गणगौर माता का अभिषेक किया गया। घर-घर में स्थापित ईसर गौरी की प्रतिमाओं के समक्ष दीप-धाराएं और नैवेद्य के साथ श्रद्धा की महिमा बिखरी रही। उद्यान पर्व के महिमा महिलाओं ने 16 सुहागिनों को भोजन कराकर और उपहार भेंट कर रंजित किया। निभाई जयपुर में गणगौर केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आस्था, प्रियेतास का विलस है। जयपुर में रीत्येतास का विलस है। जयपुर में सोडाला की रहने वाली पूजा सेनी बताया कि होली के अगले दिन धूलूले से शुक्र होने वाला यह 16 दिनांसी का हर दिन पूरु उस्ताह। सध मनसाया जा जा। लोक परंपरा में ईसर और गणगणगौर को भगवान शिव और माता पार्वती के स्वरूप माना जाता है, जिनका पूजन दीपलप्य सुख और प्रेम का प्रतीक है।